

अथ शिवसंकल्प मंत्रः

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भावार्थ—हे प्रभो! दिव्य शक्तिवाला जो मन जागते और सोते हुए विचार करता-करता दूर-दूर तक चला जाता है, जो ज्ञान देनेवाली इन्द्रियों को ज्ञान लाकर देता है, जिसके बिना इन्द्रियाँ ज्ञान ग्रहण नहीं कर सकतीं, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारोंवाला हो ।

येन कर्माण्युपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्ष्मन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भावार्थ—हे प्रभो! जिस मन के द्वारा शरीर से धीर तथा मन से मनस्वी लोग ज्ञानपूर्वक कर्मों को करते हैं, जो हम प्राणियों को आपकी अपूर्व, विलक्षण देन है— इसलिये जो हमारे लिये पूजा के योग्य है, वह हमारा मन शुभ विचारोंवाला हो । यह मन हमारे पास आपकी दी हुई एक ऐसी देन है, जिसका अगर हम सदुपयोग करें तो जीवन को सफल बना सकते हैं और अगर उसका दुरुपयोग करें तो जीवन को निरर्थक भी बना सकते हैं ।

यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भावार्थ—हे प्रभो! जो मेरा मन ज्ञान का साधन और चेतन है, जो विकट परिस्थितियों में मुझे धैर्य देता है, जो अमर-ज्योति के रूप में हमारे अन्तःकरण में बैठा हुआ है, जिसके बिना हम अंगुली तक नहीं हिला सकते, वह मेरा मन शुभ विचारों वाला हो ।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भावार्थ—हे प्रभो ! जिस मन ने अपनी चिन्तन-शक्ति से भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् को मानो मुट्ठी में पकड़ रखा है, अर्थात् जो तीनों कालों का चिन्तन कर सकता है और जिस मन की सहायता से शरीररूपी यज्ञ में आँखें, नाक, कान तथा मुख 'होता' बनकर जीवन-यज्ञ चला रहे हैं, वह मेरा मन शुभ विचारोंवाला हो ।

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविंवाराः ।
यस्मिंश्चित्तः सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

भावार्थ—हे प्रभो ! जिस मन में रथ-नाभि में आरों की तरह ऋक्, साम, यजु पिरोये हुए हैं, जिसमें हर प्राणी का चिन्तन समाया हुआ है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारोंवाला हो ।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

—यजुः० अ० ३४। मं० १-६॥

भावार्थ—हे प्रभो ! जैसे उत्तम कुशल सारथि घोड़ों को लगामों की सहायता से जिधर चाहता है घुमा ले जाता है, इसी प्रकार हृदय में बैठा यह गतिशील, चञ्चल, शक्तिमान् मन हमें भरमाये फिरता है । कृपा करो भगवन् ! ताकि यह मन शुभ-संकल्पोंवाला हो जिससे यह हमें कुपथ में बरबस भटकाने के स्थान में सुपथ में ले जाये ।